RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-03
March-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

# स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी गीतिनाट्य का शिल्प–सौन्दर्य

डॉ0 अशोक कुमार

उच्च माध्यमिक शिक्षक

**ARTICLE DETAILS**

**Article History**

*Published Online:* 30 March 2018

**Keywords**

सृजनशीलता, सौंदर्ययुक्त

**ABSTRACT**

सामान्यतः हिन्दी पाठकों में यह धारणा प्रचलित है कि गीति नाट्य का संबंध सौंदर्ययुक्त भावनाओं से है। उसका संबंध जीवन की कठोर भाव–भूमि से नहीं होता। संभवतः यह धारणा इसके अंग्रेजी साहित्य में प्रचलित शब्द 'लिरिक' से संबंध रखनें के कारण उपजी है। वस्तुतः सृजनशीलता देश–काल सापेक्ष होती है। इसमें युगबोध की उपेक्षा नहीं की जा सकती। इसलिए जब हमारा देश आजाद हुआ तो साहित्य का कलेवर भी बदला और उसने युनानुरूप सत्य के संधन का मार्ग खोजना शुरू किया। कोमल भावनाओं के प्रस्तोता रचनाकारों को भी जब समाज में संघर्ष और तनाव की स्थिति दिखी तो उससे वे प्रभावित हुए बिना न रह सके। कुछ ने व्यंग्यात्मक रचनाएँ लिखी तो कुछ ने प्राचीन संदर्भों को मिथक रूप में स्वीकार किया और अपने अंदाज में उसे यथार्थवादी जामा पहनाया। स्वातंत्रयोत्तर गीति नाट्यकारों ने कविता और नाटक की संश्लिष्ट रचनाएँ प्रस्तुत की जिनमें धर्मवीर भारती का 'अंधायुग', नरेश मेहता का 'संशय की एक रात', गिरिजा कुमार माथुर का 'कल्पांतर', जानकी वल्लभ शास्त्री का 'पाषाणी' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। ये सभी कृतियाँ मिथकीय आधार पर निर्मित हैं। आधुनिक संवेदना के गायक इन रचनाकारों ने अपने भाव संप्रेषण के लिए जिन कथा–प्रसंगों को चुना है वे प्राचीन पौराणिक आख्यानों या मिथकों से संबंधित है। प्रस्तुत शोध–आलेख में इन्ही तथ्यों को उपस्थापित किया गया है।

**शोध–आलेख की महत्ता, उद्देश्य और सामग्री संकलन :**

प्रस्तुत शोध–आलेख में स्वातंत्रयोत्तर गीतिनाट्यों में यथार्थ–बोध को तलाशने का प्रयास किया गया है। स्वातंत्रयोत्तर काव्य–विधाओं के अनेक रूपों पर कई सामग्री उपलब्ध हैं जिनमें डॉ नामवर सिंह की 'नयी कविता के प्रतिमान', इन्द्र नाथ मदान की 'आधुनिकता और हिन्दी साहित्य', कुँवर नारायण की 'सामाजिक यथार्थ' इत्यादि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त डॉ0 कौशाम्बी के ग्रंथ 'मिथक और यथार्थ' में पौराणिक आख्यानों की चर्चा की गई है। स्वातंत्रयोत्तर गीति–नाट्यों के अध्ययन के लिए रचनाकारों की नाट्यकृतियों को ही अध्ययन का आधार बनाया गया है। अध्ययन से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्रियों का संकलन साहित्य के विभिन्न शोध–ग्रंथों एवं पत्र–पत्रिकाओं से किया गया है। प्रस्तुत शोध–आलेख स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी गीतिनाट्यों के शिल्प–सौंदर्य का एक विशेष दृष्टि से अनुशीलन करता है।

**विवेचन** :

'अंधायुग' के नाटकीय शिल्प में संवादों की भूमिका विशेष उल्लेखनीय है। इसमें एक भी संवाद पूर्वनिर्धारित प्रतिमानों से बंधा हुआ नही है प्रत्युत् परिस्थिति–परिप्रेक्ष्य के कारण संवाद पात्र के अंतःकरण से निकले हुए प्रतीत होते हैं। प्रथम प्रहरी के संवाद में नाट्यतत्व की अधिकता है और द्वितीय प्रहरी में काव्य–तत्व की प्रधानता। नाटक और काव्य को एकलय में ढ़ालने की यह कला 'अंधायुग' को एक विशिष्ट कृति सिद्ध करती है। ध्यातव्य है कि 'अंधायुग' में स्व–कथनों का बहुत प्रयोग हुआ है। ये स्व–कथन पुराने नाटकों के आश्रय कथनों को नये शिल्प में ढ़ालने के नवीन प्रयोग हैं। हिन्दी के प्रसिद्ध नाट्कार जयशंकर प्रसाद ने भी अपनी प्रारंभिक नाट्य–कृतियों में इन स्वागत कथनों का अनेकों बार प्रयोग किया था किन्तु, प्रसान के अनन्तर जिस नाट्य कला का विकास हुआ था, उसने इस तरह के प्रयोगो को अस्वीकार कर दिया था। यह उल्लेखनीय है कि धर्मवीर भारती ने उस युगीन अस्वीकृति को नये आयाम में प्रस्तुत कर दर्शक वर्ग को एक नये सुख की अनुभूति करायी है। 'अंधायुग' दृश्य–काव्य अपने मंचन के लिए भी ख्यात रहा है। 'अंधायुग' के प्रारंभ में ही रचनाकार ने एक विस्तृत निर्देश–विधान किया है। उन्होंने लिखा है– ''मूलतः यह काव्य रंगमंच को दृष्टि में रखकर लिखा गया था। यहॉ वह उसी मूल रूप में छाया रहा है। लिखे जाने के बाद इसका रेडियो–रूपान्तर भी प्रस्तुत हुआ, जिसके कारण इसके संवादों की लय और भाषा को समझने में काफी सहायता मिली। दिशा–निर्देश में गीति–नाटककार ने अनेक सुझाव दिये हैं। इसकी समस्त कथावस्तु पाँच अंकों में विभाजित है, बीच में अंतराल है। मंच–विधान जटिल नहीं है और दृश्य परिवर्तन के समय कथा–गायन की योजना है। प्रतीत होता है कि गीति नाटककार ने यह पद्धति लोक नाट्य परम्परा से ली है। संवाद मुक्तछंद में है और बीच–बीच में विभिन्न प्रकार की छंद–योजना से रहित वृत्तगंधी गद्य का प्रयोग किया गया है। प्रहरियों के समस्त संवाद एक ही लय में प्रस्तुत किये गये हैं। भारती 'अंधायुग' में परिवेश और व्यक्ति चेतना, नियति और व्यक्ति–निर्णय, तटस्थता और पक्षधरता, विजय और पराजय, आस्तिकता और अनास्था, आसक्ति और अनासक्ति, सच और झूठ जैसी बुनियादी अवधारणाओं की पुनर्परीक्षा की जरूरत सामने रखते हैं और भावनाओं और विचारों को कुरेदते हुए नैतिक मूल्यों के इस्तेमाली हथकण्डों

© RRIJM 2015, All Rights Reserved 

की कलई खोलते हैं। भारती ने अपने इस काव्य–नाट्य में मूल्यों की संरचना को इतना सार्थक बना दिया है कि बदली हुई परिस्थितियों में भी युगबोध की अनुगूंज पैदा होती है और कृति की ताजगी बनी रहती है। 'अंधायुग' में भारती की अभिव्यक्ति का मुख्य साधन भाषा ही है और उसमें भाषा की पकड़ मजबूत है। पैराणिक या ऐतिहासिक कथानकों के नाटक में एक ऐसी सही भाषा का चुनाव जो प्राचीनता का परिवेश भी रच सके और समकालीन जीवन–बोध से जुड़ते हुए प्रासंगिक मूल्यों की पूरी अर्थवेत्ता और असर बनाये रख सके, अब तक एक मुश्किल काम था। भारती ने इस दिशा में पहली बार काफी बड़ी सफलताएँ हासिल की है।

**'शम्बूक' का नाट्य शिल्प :**

जगदीश गुप्त नई कविता के समर्थक कवि हैं और गीतिनाट्यों के लेखन में उनकी रूचि गहन और विशिष्ट है। 'शम्बूक' उनका प्रसिद्ध गीतिनाट्य है, जो दलित चेतना को आधार बनाकर लिखा गया है। कवि का वैशिष्ट्य यह है कि अपने काव्यात्मक संवादों में वे किसी एक रूप, किसी एक दृश्य के सूक्ष्मकर भाव को इस तरह उभार कर उकेरते हैं कि उन भाव–स्पंदनों से जो बिम्ब बनता है वह अति सूक्ष्म होता है। इसी कारण चित्रात्मकता, सांकेतिकता और संशिलष्टता उनमें एक साथ दिखाई देती है। जगदीश गुप्त ने 'शम्बूक' की भाषा–संरचना में आधुनिक सामाजिक स्वर को स्वीकार किया है, जिससे उनमें लोक जीवन के प्रति गहरी निष्ठा दिखलाई देती है। 'शम्बूक' में समाज में उपेक्षित अंत्यज–जीवन के दर्द और दुख को कवि ने सार्थक अभिव्यक्ति दी है। लेखक के संवाद की एक खास विशेषता यह है कि वे बात–चीत की भाषा में अपने संवादों को समृद्ध करते हैं। यही कारण है कि शब्द–कौशल और सरलतम संवाद–शैली के प्रयोग ने 'शम्बूक' को अद्भुत पारदर्शी गुण प्रदान किया है। संवेदनात्मक संवादों ने गीतिनाट्य को सार्थक दिशा बोध और गहरा दृष्टिकोण प्रदान किया है। इसमें लोक–ध्वनि और लोक–रंग का संगीत झंकृत है। शब्द कठिन और दुरूह नहीं है बल्कि सीधे और सजह शब्दों का प्रयोग किया गया है। संवाद कहीं लम्बे और कहीं–कहीं छोटे हैं। कोई–कोई संवाद तो दस बारह पृष्ठों तक है। बावजूद इसकी भाषा में और संवाद अदायगी में कहीं उबाऊपन नहीं होता। यह भी उल्लेख्य है कि 'शम्बूक' की संवाद–योजना में परम्परागत रूप से काव्यात्मक समझो जाने वाले शब्दों का अभाव है। इसका कारण यह है कि 'शम्बूक' की संवाद योजना में परम्परागत रूप से काव्यात्मक समझे जाने वाले शब्दों में तारतम्य जोड़कर अपने पुराने और खोये हुए व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करते हैं।

**'कल्पान्तर' का नाट्य–शिल्प :**

'कल्पान्तर' का नाट्य–शिल्प तत्कालीन साहित्य मर्मज्ञों को अपने नवीन प्रयोगों के कारण व्यापक रूप में ध्यान आकृष्ट किया था। यह एक रेडियो गायक और इसका नाट्य प्रसारण एक घंटे के लिए 26 मार्च, 1952 को आकाशवाणी दिल्ली से हुआ था। अभिप्राय यह कि प्रस्तुत गीति–नाट्य रंगमंच की दृष्टि से मंचनीय है। गिरिजा कुमार माथुर लम्बे अंतराल तक आकाशवाणी से सम्बद्ध रहे हैं। अतः संभव है कि उनकी भूमिका के दबाव में उन्होंने प्रसारण के लिए विशेष्य गीति–नाट्य की रचना की हो। यह विशेष उल्लेखनीय है कि गिरिजा कुमार माथुर 'काव्यान्तर' के माध्यम से साहित्य जगत को कुछ नया देना चाहते हैं। उनका यह विश्वास रहा है कि टेकनीक के अभाव में साहित्य सर्जना अधूरी रह जाती है। ''तार–सप्तक एक'' वक्तव्य में उन्होंने लिखा भी है :– 'विषय की मौलिकता का पक्षपाती होते हुए भी मेरा विश्वास है कि टेकनीक के अभाव में कविता अधूरी रह जाती है।'' कवि का यही टेकनीक आगे चलकर एक नये नाट्य–शिल्प के रूप में 'कल्पान्तर' में वितान पाया गया है। इससे प्रतीत होता है कि साहित्य सर्जन में टेकनीक को समृद्ध बनाने में वे एक कुशल इंजीनियर की तरह रहे हैं। टेकनीक या शिल्प के कारण अपनी कृतियों में वे तरह–तरह के रंग भरने में अद्भुत सफल रहे हैं।

**'पाषाणी' का नाट्य–शिल्प :**

हिन्दी गीतिनाटक के ऐतिहासिक विकास क्रम में जानकी वल्लभ शास्त्री का ऐतिहासिक महत्व इस कारण है कि उन्होंने अपनी सृजनशीलता द्वारा गीतिनाट्य–धारा को अभिजात साहित्यिक गरिमा को मंडित कर दिया है। 'पाषाणी' को कवि ने स्वयं संगीतिका कहा है। संगीतिका आद्योपांत संगीत पर आधारित नाट्यात्मक गीतिबद्ध रचना होती है, जो प्रायः कोमल तथा सरस अनुभूतियों को ही अपना आधार बनाती है। रचना–प्रक्रिया के द्वारा इसमें अंतर्द्वन्द्वों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति तथा पात्रों के मनोविज्ञान की विश्लेषणात्मक भाव–रेखा के साथ–साथ आकर्षक चरित्र–चित्रण कर कलात्मक गुरूता भी उत्पन्न की गयी है। गीतिनाट्य का प्राणत्व संघर्ष तथा अंतर्द्वन्द्व, प्रतीकात्मक स्तर पर पात्रों का प्रस्तुतीकरण करते हुए 'पाषाणी' में नाटकीय औदात्य को स्थापित करने का यत्न किया गया है। इसमें कवि ने केवल एक रात की कहानी को कथन आधार बनाया है। परिणामतः संध्या से प्रातःकाल तक की राग–रागिनियों में समस्त संगीत तत्व बँधा हुआ है। गीतिनाट्यों में काव्य–भाषा की अपनी महत्ता है। आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री ने कविता के लिए जिस संस्कृतनिष्ठ भाषा का विकास किया उसे उन्होंने अपने गीतिनाट्यों के लिए भी इस्तेमाल किया। परिणामतः उनके गीतिनाट्यों की भाषा में भी विशेषकर 'पाषाणी' में अलंकृत, लाक्षणिकता, व्यंजना और भाव–प्रधानता के साथ–साथ बिंबपरकता प्रचुर मात्रा में विद्यमान है।

संगीतिका की इस कसौटी पर 'पाषाणी' श्रेष्ठ रचना सिद्ध होती है। यह आदि से अंत तक संगीत पर आधरित है।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved 

कई बारी के मंचन ने यह सिद्ध किया है कि 'पाषाणी' में गीतिनाट्य के सभी गुण मौजूद हैं तथा यह रंगमंच के पितामह और नाट्य सम्राट पृथ्वीराज कपूर को समर्पित है। गीतिनाट्यकार ने इसमें नारी जीवन की मनोवैज्ञानिक व्याख्या की है। इस संबंध में उन्होने लिखा है कि 'पाषाणी' मूलतः मनौवैज्ञानिक है, ''मैंने यह प्रयास किया है कि तपोवन की प्राकृतिक सीमाओं से काव्य और संगीत की कलात्मक सीमाएँ एकतान हो जाये और बाह्य–अभ्यंतर की सम–विषमताओं को सूक्ष्म मानवीय, संवेदनाएं सांकेतिक रूप से आंदोलित करती रहें। इस तरह यह स्पष्ट होता है कि 'पाषाणी' आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण संगीतिका है, गीतिनाट्य रचना है।

**'संशय की एक रात' नाट्य –शिल्प :**

गीति–नाट्यों की सबसे बड़ी कसौटी, सबसे बड़ा निकष उसका नाट्य–शिल्प होता है। डॉ0 लक्षीकान्त वर्मा ने विवेच्य कृति की शिल्प–योजना के संबंध में लिखा है कि 'संशय की एक रात' की शिल्प योजना मूलतः एक खण्ड–काव्य की है, जिसमें कथोपकथन, एकालाप, वार्त्तालाप और आत्म–विवेचन के माध्यम से पूरी कथावस्तु के साथ नया सन्दर्भ जुड़ता चलता है। श्री नरेश मेहता के शिल्प में न तो ऐसा लगता है कि आज के युग का मनुष्य केवल पलायन के लिए इस घटना और कथानक को चुनता है और न यही प्रतीत होता है कि उन पुराण–पात्रों को जबरदस्ती निर्भूल करके आज के आधुनिक युग की अर्थहीनता के बीच लाकर खड़ा कर दिया गया है। उन्होनें दोनो को अपने–अपने संदर्भ में जैसे को तैसा रहने दिया है। केवल काल की दूरी को हटाकर कुछ प्रश्न, कुछ संशयों को उनके बीच बिखेर दिया है। कवि का यह देखने का भी भरपूर प्रयास रहा है कि यदि वर्तमान सन्दर्भ में उन प्रश्नों को राम, लक्ष्मण, विभीषण और हनुमान के समक्ष रख दिये जाय तो उनकी प्रतिक्रिया क्या होगी? यह भी सत्यसिद्ध है कि प्रतीक पात्रों या ऐतिहासिक पात्रों के सामने से काल की दूरी हटा लेने पर प्रायः वे पात्र निष्प्राण और अर्थहीन हो जाते हैं। पर, कवि ने 'संशय की एक रात' में जिस शिल्प–विधि का प्रयोग किया है, वह सर्वथा नवीन और आधुनिक है। यह नयी कविता युग की एक महत्वपूर्ण कृति है और नयी कविता के युग में लघुमानववाद लक्ष्मण के चरित्र में उभर कर आया है। वे एक और जहाँ राम के विराट्त्व की कल्पना में क्षण के विवेक की निष्ठा और विकल्प को कर्म और वर्चस्व शंकालु होकर अपने से अलग कर देना चाहते हैं वहीं पर लक्ष्मण इनकी परम्परागत अर्थवेत्ता में अर्थ के नव्य और नवीन सन्दर्भ जोड़ते हैं। इस दृष्टि से इस गीति–नाट्य की शिल्प–योजना में विराट्त्व की असीमता और लघु की सघनता दोनो को राम लक्ष्मण प्रभृति ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

'संशय की रात' के शिल्प विधान के दो महत्वपूर्ण स्तर द्रष्टव्य हैं– एक भाषा और दूसरे बिम्ब–विधान। आलोच्य गीतिनाट्य की भाषा का स्वरूप अपने विवेचन में बहुत हद तक सामान्य जन की भाषा और आर्ष–चिंतन से युक्त प्रतीत होता है। काव्य में प्रयुक्त ढ़ेर सारे शब्द आर्ष–चिंतन की ही शब्दावली है। इसके अतिरिक्त बिम्बो का, प्रतीकों का और मिथकीय चरित्रों का जितना सशक्त और सफल प्रयोग कवि ने किया है उतना नई कविताधारा में अन्यत्र दुर्लभ है।

**निष्कर्ष :**

अध्ययनोपरान्त निष्कर्ष यह है कि आलोच्य गीतिनाट्यों में मिथकीय चेतना के बावजूद आधुनिक एवं सामाजिक संदर्भों के लिए यह उपयोगी है। अंग्रेजी शब्द मिथ हिन्दी में मिथक रूप में गृहीत और प्रचलित है। इसके लिए हिन्दी में पुरावृत्त, पुरा कथा, कल्प कथा आदि शब्दों का भी यत्र–तत्र प्रयोग हुआ है लेकिन प्रचलन मिथ या मिथक शब्द का ही सर्वाधिक है। वास्तव में जिन मिथक घटनाओं को कपोल–कल्पित कहा जाता है उन्हें करोड़ों वर्ष पहले कुछ लोगों ने एक साथ झेला होगा। भारतीय स्वतंत्रता के प्रसंग में जिन मिथकों का प्रयोग हुआ है वे बड़े विचित्र हैं। गीति–नाट्यों में संवाद शैली उसकी रीढ़ होते हैं। कहा जा सकता है कि वातावरण की सजीव सृष्टि के लिए कथावस्तु के विकास के लिए, पात्रों के चरित्रांकन के लिए तथा रचना उद्देश्य के लिए संवाद और शैली का गीतिनाट्य में विशेष महत्व है। प्रस्तुत अध्ययन का संपूर्ण भाग इन्हीं तथ्यों को रेखांकित करता है। इसके अतिरिक्त संवाद और शैली देश, काल और पात्र की परिस्थिति एवं मनोवृति के अनुकूल है। अतः स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी गीतिनाट्यों का शिल्प–सौन्दर्य मार्मिक और सजीव है जो दर्शक अथवा श्रोता का हृदय स्पर्श करने में भी समर्थ है।

**संदर्भ एवं आधार ग्रंथ :–**


1. कल्पांतर : गिरिजा कुमार माथुर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. शम्बूक : जगदीश गुप्त, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद।
3. पाषाणी : आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री, निराला निकेतन, मुजफ्फरपुर, बिहार।
4. पहचान और परख : डॉ0 मृत्युंजय उपाध्याय, शंकर प्रकाशन, धनबाद।
5. अंधायुग : धर्मवीर भारती, किताब महल, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद।
6. आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृतियाँ : डॉ0 नगेन्द्र गौतम, बुक डिपो, नई दिल्ली।


© RRIJM 2015, All Rights Reserved 

7. आधुनिक कविता : प्रकृति और परिवेश, डॉ0 हरिचरण शर्मा, चिन्मय प्रकाशन, जयपुर।
8. संशय की रात : नरेश मेहता, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गॉधी मार्ग, इलाहाबाद।
9. कविता के नये प्रतिमान : डॉ0 नामवर सिंह, राजमहल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. तार–सप्तक : स0 अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved